प्रो. पुष्पा महाराज
हिन्दी विभाग
सेमेस्टर IV (MJC)

छायावाद की प्रमुख प्रवृतियाँ

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद को अत्यंत महत्वपूर्ण युग माना जाता है। यह काल मुख्यतः 1918 से 1936 के बीच विकसित हुआ। इस युग में कविता ने बाहरी यथार्थ और वर्णनात्मकता से हटकर आत्मानुभूति, प्रकृति-सौन्दर्य, प्रेम, करुणा, रहस्य तथा व्यक्तिवाद की ओर उन्मुखता प्राप्त की।

छायावाद का उदय द्विवेदी युग की नैतिकतावादी, शिक्षाप्रधान और तर्कप्रधान कविता की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इस नयी काव्यधारा को आगे बढ़ाने में चार प्रमुख कवियों —
जयशंकर प्रसाद
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
सुमित्रानंदन पंत
महादेवी वर्मा
का विशेष योगदान रहा। इन्हें छायावाद के चार स्तंभ भी कहा जाता है।

छायावाद की काव्यधारा केवल शैलीगत परिवर्तन नहीं थी, बल्कि यह मनुष्य की आंतरिक चेतना, सौन्दर्यबोध और आत्मिक अनुभूति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति थी।

अब हम छायावाद की मुख्य प्रवृत्तियों को विस्तार से समझते हैं...

1. व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति

छायावादी कविता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता व्यक्तिवाद है।
इससे पहले हिन्दी कविता में समाज, धर्म, नीति और आदर्शों की प्रधानता थी, परन्तु छायावाद में कवि स्वयं अपनी अनुभूतियों का केन्द्र बन गया।

कवि के सुख-दुःख, प्रेम-विरह, आशा-निराशा, पीड़ा और स्वप्न — सब उसकी निजी चेतना से जुड़े हुए हैं।

उदाहरण के रूप में प्रसाद की काव्यकृति **कामायनी** में मनु का चरित्र मनुष्य की आंतरिक मानसिक अवस्थाओं का प्रतीक बन जाता है।

इस प्रकार छायावाद में “मैं” की भावना प्रमुख हो गई।

2. प्रकृति-सौन्दर्य का चित्रण

छायावादी कवियों ने प्रकृति को केवल दृश्य वस्तु नहीं माना, बल्कि उसे जीवंत और संवेदनशील सत्ता के रूप में चित्रित किया।

प्रकृति उनके लिए –

- मित्र है
- प्रेरणा है
- सहचरी है
- आत्मा की अभिव्यक्ति है

पंत की कविताओं में पर्वत, झरने, फूल, चाँदनी, पवन आदि का अत्यंत कोमल और संगीतात्मक चित्रण मिलता है।

छायावादी प्रकृति-चित्रण की विशेषताएँ:

- मानवीकरण (प्रकृति को मानव रूप देना)
- कोमलता और लयात्मकता
- सौन्दर्य और शांति की अनुभूति
- रहस्यात्मकता

इस प्रकार प्रकृति छायावादी कविता का प्राणतत्व बन जाती है।

3. रहस्यवाद की प्रवृत्ति

छायावादी काव्य में रहस्य की भावना अत्यंत प्रबल है।
यह रहस्यवाद धार्मिक न होकर भावात्मक और दार्शनिक है।

कवि किसी अज्ञात सत्ता, अनंत शक्ति या परम सौन्दर्य की खोज करता है।
यह खोज सीधे शब्दों में नहीं, बल्कि प्रतीकों और संकेतों के माध्यम से व्यक्त होती है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में “अज्ञात प्रिय” की अनुभूति इसी रहस्यवाद का उदाहरण है।

इस प्रवृत्ति के कारण छायावादी कविता में

- धुंधलापन
- संकेतात्मकता
- सूक्ष्म अनुभूति
- आत्मिक खोज

देखने को मिलती है।

4. प्रेम और विरह की भावना

छायावादी काव्य में प्रेम प्रमुख भाव है, परन्तु यह शारीरिक प्रेम नहीं बल्कि आध्यात्मिक और आत्मिक प्रेम है।

यह प्रेम कई रूपों में प्रकट होता है:

- प्रिय की खोज
- विरह की पीड़ा
- अनंत मिलन की चाह
- स्मृति और वेदना

महादेवी वर्मा की कविता में विरह का स्वर अत्यंत मार्मिक है। उनका प्रेम व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वभौमिक हो जाता है।

इस प्रकार छायावाद में प्रेम का रूप सूक्ष्म, कोमल और आध्यात्मिक है।

5. करुणा और वेदना की अनुभूति

छायावादी कवियों की कविता में करुणा और वेदना का स्वर बार-बार सुनाई देता है।
यह वेदना केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि जीवन की गहन अनुभूति से उत्पन्न होती है।

इसके कारण कविता में

- संवेदनशीलता
- आत्मपीड़ा
- करुण रस
- जीवन की विषमता का बोध

स्पष्ट दिखाई देता है।

महादेवी वर्मा को तो “वेदना की कवयित्री” भी कहा जाता है।

6. सौन्दर्यवाद की प्रवृत्ति

छायावाद का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य सौन्दर्य की खोज है।
यह सौन्दर्य केवल रूप का नहीं बल्कि –

- भाव का
- प्रकृति का
- आत्मा का
- भाषा का

छायावादी कवियों ने शब्दों को संगीतात्मक बनाया और काव्य को कलात्मक ऊँचाई दी।

उनकी दृष्टि में कविता का उद्देश्य केवल उपदेश नहीं बल्कि सौन्दर्य-अनुभूति भी है।

7. प्रतीक और बिंब योजना

छायावादी काव्य में प्रतीकों और बिंबों का अत्यंत सुंदर प्रयोग हुआ है।
कवि अपनी अनुभूतियों को सीधे न कहकर प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करता है।

जैसे:

- चाँद = प्रिय या सौन्दर्य
- पथ = जीवन यात्रा
- अंधकार = दुःख या अज्ञान
- दीप = आशा

इससे कविता में

- गहराई
- कलात्मकता
- भावपूर्णता

बढ़ जाती है।

8. नारी-भावना और कोमल संवेदना

छायावाद में नारी का चित्रण अत्यंत कोमल, सम्मानपूर्ण और भावनात्मक है।
नारी को केवल सौन्दर्य की वस्तु न मानकर उसे संवेदना, प्रेम और त्याग की प्रतिमूर्ति माना गया।

महादेवी वर्मा की रचनाओं में नारी के आत्मसम्मान और संवेदनशीलता का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है।

इस प्रकार छायावाद ने हिन्दी कविता में नारी के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया।

9. भाषा और शैली की विशेषता

छायावादी कविता की भाषा अत्यंत काव्यमयी, लयात्मक और मधुर है।

इसकी प्रमुख विशेषताएँ:

- संस्कृतनिष्ठ शब्दावली
- कोमल ध्वनियाँ
- अलंकारों का प्रयोग
- संगीतात्मक लय
- भावप्रधानता

छायावाद ने हिन्दी भाषा को कलात्मक ऊँचाई प्रदान की और कविता को सौंदर्यपूर्ण बना दिया।

10. स्वच्छन्दतावाद की भावना

छायावाद में कवि पर किसी प्रकार की बंधनकारी परम्परा नहीं रही।
वह विषय, शैली और भाव — सभी में स्वतंत्र हो गया।

यह स्वतंत्रता दिखाई देती है:

- छंदों में
- भाषा में
- भावों में
- कल्पना में

इस कारण छायावाद को हिन्दी का रोमांटिक युग भी कहा जाता है।

11. मानवतावाद की प्रवृत्ति

यद्यपि छायावाद व्यक्तिवादी है, फिर भी उसमें मानवता का भाव विद्यमान है।

कवि मनुष्य के दुःख-सुख, प्रेम, करुणा और संवेदना को महत्व देता है।

निराला की कविताओं में गरीब, पीड़ित और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति मिलती है।

इस प्रकार छायावाद केवल स्वप्नलोक में ही नहीं, बल्कि मानव जीवन की वास्तविक संवेदना से भी जुड़ा है।

12. कल्पनाशीलता की प्रधानता

छायावादी कविता कल्पना की उड़ान से भरपूर है।
कवि वास्तविकता से ऊपर उठकर सौन्दर्य और भावलोक की सृष्टि करता है।

इस कल्पना के कारण कविता में

- चित्रात्मकता
- संगीतात्मकता
- भावसंपन्नता

उत्पन्न होती है।

उपसंहार

छायावाद हिन्दी साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली युग है।
इसने हिन्दी कविता को नई दिशा, नई भाषा, नई संवेदना और नई कलात्मकता प्रदान की।

इस काव्यधारा ने

- व्यक्तिवाद को प्रतिष्ठित किया
- प्रकृति को नया रूप दिया
- प्रेम और वेदना को सूक्ष्म बनाया
- भाषा को मधुर और काव्यमयी बनाया
- प्रतीक और बिंब योजना को समृद्ध किया

छायावाद के कारण हिन्दी कविता केवल उपदेशात्मक न रहकर आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति बन गई।

इसलिए कहा जाता है कि छायावाद ने हिन्दी काव्य को आत्मा, संगीत और सौन्दर्य प्रदान किया ।